



डेरे वाले बाबा जी और सन्तान सुख की लालसा-2

“मेरी बीवी संतान की चाहत में माँ के साथ डेरे वाले बाबाजी के पास गई। इस भाग में पढ़िए कि डेरे में बाबा ने क्या कहा, वहाँ क्या क्या हुआ, मेरी बीवी के मुख से!...”

Story By: Heart Snatcher (hsnatcher)

Posted: Saturday, September 10th, 2016

Categories: [इंडियन बीवी की चुदाई](#)

Online version: [डेरे वाले बाबा जी और सन्तान सुख की लालसा-2](#)

डेरे वाले बाबा जी और सन्तान सुख की लालसा-2

अब तक आपने जाना..

मेरी बीवी संतान की चाहत में मेरी माँ के साथ डेरे वाले बाबाजी के पास गई और उन्होंने उससे समस्या को जान कर पीछे बने एक कमरे में जाने का हुक्म सुना दिया।

अब आगे..

वह बड़ी ही व्याकुलता से यह सब बता रही थी।

‘बहुत ही सुंदर कमरा था। भीनी-भीनी इत्र की खुशबू आ रही थी और हर जगह हल्की रोशनी से सराबोर थी। बहुत ही आलीशान बिस्तर लगा था और एक तरफ खूबसूरत सोफा सैट भी था।

मैं सोफे पर बाबा जी का इंतज़ार करने लगी और 5-6 मिनट में बाबा जी आकर सामने वाले सोफे पर बैठ गए।

ऊपर से नीचे तक सफेद कुरते पजामे में.. सर पर सफ़ेद पगड़ी के साथ बाबा जी और भी शांत लग रहे थे।’

उन्होंने बड़ी ही शालीनता के साथ मुझसे कहा- सब मुश्किलें हल हो जाएंगी बेटी.. तुम्हें बाबा का लिंग भोग लगाना होगा।

मैं थोड़ा डर गई और पूछा- बाबा जी यह क्या होता है ?

बाबा जी ने कहा- बेटी डरने कोई आवश्यकता नहीं है। बस हमारे लिंग को प्रसाद समझ

कर एक बार चूमना है और एक बार अपनी योनि पर स्पर्श करवाना है.. अपने आप सारे संकट कट जाएँगे। अपने बच्चे के लिए इतना तो कर ही सकती हो ना.. बाकी तुम्हारी इच्छा है।

इतना कह कर बाबा जी ने अंतिम निर्णय मेरे पर छोड़ दिया।

मेरे पास कोई और विकल्प भी नहीं था और मैं बाबा जी की आज्ञा की अवेहलना भी नहीं कर सकती थी.. इसलिए मैंने कहा- बाबा जी जैसा आप ठीक समझें।

मेरे इतना कहते ही बाबा जी ने अपना कुरता ऊपर किया और पजामे का नाड़ा खोलने लगे। वो मुझे देख कर मुस्कराते हुए थोड़ा सोफे से ऊपर उठे.. पजामा सरक कर नीचे गिर गया। उनके ऊपर उठने से कुरते का अगला हिस्सा वापिस नीचे आ गया.. जिस वजह से मैं बाबा का लिंग नहीं देख पाई।

बाबा वापिस फिर से सोफे पर बैठ गए। मैं उन्हें एकटक देखती रही।

बीबी के मुँह से यह सब सुनकर मुझे कुछ अजीब सा लग रहा था। मेरे लंड में भी तनाव आ गया था और सुनते-सुनते पता नहीं चला कि कब अन्दर से थोड़ा-थोड़ा कच्छा भी गीला होने लगा।

मेरे चेहरे के भाव देख कर जगजीत कुछ पल के लिए चुप हो गई।

फिर मुझे देखती हुए उसने अपनी चुप्पी तोड़ी और बोली- जानू आप नाराज़ तो नहीं हो रहे.. यह सब तो मैं अपने बच्चे के लिए ही करके आई हूँ।

मुझे अच्छे या बुरे का पता नहीं चल रहा था.. मैं बस यह पूरा वाकिया सुनना चाहता था। अगर गुस्सा करता तो वह झूठ बोल देती.. पर मुझे सब सच सुनना था।

‘अरे मेरा शोना बाबू.. मैं तुमसे क्यों नाराज़ होने लगा.. आखिर यह सब तुमने अपने बच्चे के लिए ही तो किया है.. वो भी बाबा जी के साथ। मुझे बहुत अच्छा लगा कि तुमने मुझसे इसपे बात की। फिर बताओ आगे क्या हुआ?’

मैंने उसे ढांडस बंधाया और विश्वास में लेने की कोशिश की।

जगजीत ने आगे बताना शुरू किया :

‘बस फिर क्या था.. बाबा जी ने सोफे पर बैठते ही मुझे बेटी कहकर बुलाया कि आकर अपना प्रसाद ग्रहण करो।

मैं सहमी सी अपनी जगह से उठी और बाबा जी की तरफ बढ़ने लगी। बाबा जी ने नीचे अपनी टांगों के बीच कालीन की तरफ इशारा किया और मैं समझ गई कि मुझे कहाँ बैठना था।

मैं नाजुकता से नीचे बैठी और बाबा जी का कुरता.. जिसने अभी तक उनका लिंग छिपाया हुआ था.. को धीरे से उठाने लगी।

बाबा जी की जाँघों के काले बाल दिखने लगे और मैंने देखा कि उन्होंने नीचे कच्छा भी नहीं पहना था। जब कुर्ता पूरा ऊपर कर दिया तो जानू आप यकीन नहीं करोगे.. इतना बड़ा लिंग था उनका.. जितना कभी मैंने सपने में भी नहीं सोचा था।

काले रंग का नाग जैसा लिंग लगभग उनके दाहिने घुटने तक सोया पड़ा था और बड़ी-बड़ी गोलियां नर्म थैली में सोफे में उनकी टांगों के बीचों-बीच पड़ी हुई थीं।

झांटें तो इतनी घनी कि लिंग की जड़ तो पता भी नहीं चल रही थी। मुझे नहीं पता मैं कब तक बिना शर्म के खुले मुह से उनके लिंग को देखती रही।

बाबा की आवाज़ से एकदम मेरा ध्यान भंग हुआ, उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा- जगजीत..

क्या देख रही हो ?

बहुत ही मुश्किल से मैंने अपने शब्द जुटाए और बोली- यह क्या है बाबा जी ?

वह बोले- अरे कभी असली मर्द का लिंग नहीं देखा क्या ? चलो प्रसाद ग्रहण करो अपना.. और डरो मत.. यह काटेगा नहीं ।

यह कहकर वे मेरी हालत पर हँसने लगे ।

मैंने बिना उनके लिंग को हाथ लगाए अपना मुँह उसके पास किया और पूरी श्रद्धा से चूम लिया ।

क्या मस्त महक आ रही थी.. मैं तो जैसे मोहित होने लगी । इतने पास से उस महकते लिंग को देखना मुझे सम्मोहित कर रहा था ।

बाबा जी ने कहा- अरे प्रसाद ऐसे ग्रहण किया जाता है.. प्रेम से हाथ में लो और पूरी भावना से चूमो ।

मैंने लिंग को बाएं हाथ से उठाया.. बयान नहीं किया जा सकता इतना भारी और इतना लंबा कि मेरी मुट्ठी से बाहर लटकने लगा ।

मैं बिना किसी की परवाह किए उसे घूरती रही और कुछ सेकंड रुकने के बाद पता नहीं कब मैंने मुँह खोला और आगे का टोपा मुँह में लेकर चूसने लगी ।

बहुत ही आनन्द आ रहा था, इतना आनन्द जैसे लगा कि मैं आसमान में उड़ रही हूँ ।

मुझे कुछ मिनट बाद जब ध्यान आया तो पता चला कि मैं बाबा जी का लण्ड 'पुच्च.. पुच्च..' की आवाज़ करके चूस रही थी ।

मैं शर्म के मारे लाल हो गई और देखा कि लिंग में तनाव आना शुरू हो गया था । ऊपर बाबा जी की तरफ ध्यान गया तो देखा कि वह आँखें बंद करके मुँह में कुछ बोल रहे थे, बड़ी-बड़ी दाढ़ी मूछों के साथ सिर्फ बाल हिलते दिखाई दे रहे थे ।

मैंने मारे शर्म के उनका महाकाय लौड़ा अपने मुँह से निकाला.. जो मस्ती में मेरे मुँह में गले तक चला गया था ।

जब मैंने हाथ से छोड़ा तो नीचे गिरने की जगह लिंग केले के आकार जैसे मेरी तरफ तन्नाया हुआ था.. जैसे मुझे घूर रहा हो ।

तभी बाबा जी ने आँखें खोलीं.. तो हल्की सी मुस्कान के बाद बोले- सिर्फ चूमना था बेटी.. देखो तुमने इसे क्या कर दिया है ।

‘माफ़ कर दीजिए बाबा जी.. मैं भावनाओं में बह गई और पता नहीं चला..’ मैंने मायूसी से जवाब दिया ।

‘माफ़ी कैसी बेटी.. तुमने तो इतना अच्छा किया कि मैं आनन्द की अनुभूति करने लगा था । आओ अब योनि भोग का समय हो गया है..’ कहकर बाबा जी ने मुझे कन्धों से उठाया और मखमली बिस्तर पर जाने को कहा ।

मैं उनकी आज्ञा मानते हुए बिस्तर की तरफ बढ़ने लगी ।

पीछे मुड़कर देखा तो बाबा जी अपना कुर्ता निकलते हुए बोले- बिस्तर पर जाने से पहले अपनी सलवार निकाल देना ।

यह कहानी आप अन्तर्वासना डॉट कॉम पर पढ़ रहे हैं !

मेरे दिमाग में बहुत कुछ चल रहा था और मैं सोचने समझने की स्थिति में तो बिल्कुल नहीं थी ।

बाबा जी की तरफ पीठ करके ही मैंने अपनी कमीज़ ऊपर करके सलवार का नाड़ा खोला और मेरी सलवार एकदम से पैरों पर गिर गई ।

पीछे से आवाज़ आई, 'पीठ के बल बिस्तर पर लेट जाओ और टाँगें नीचे लटकती रहने देना।'

मैंने उनकी आज्ञा का पालन किया और उसी पोज़ में बेहद मुलायम एवं गद्देदार बिस्तर पर लेटते ही अन्दर धंस गई।

देखा तो बाबा जी उसी हल्की मुस्कान के साथ मेरी तरफ आ रहे थे।

गेहुंआ सा रंग था बाबा जी का.. 6'4 लम्बाई एवं हल्के काले बालों से भरा जिस्म.. ऊपर से चार चाँद लगाता.. लम्बा और मोटा लौड़ा जो अब और भी जोश से सर उठाने लगा था.. जिसकी लम्बाई का मैं सिर्फ अंदाजा ही लगा सकती हूँ।

'हम्म.. हम्म..' की आवाज़ करते हुए बाबा जी मेरी टाँगों के बीचों-बीच खड़े हो गए।

अपनी बीवी की दास्तान सुनते-सुनते मेरे मुँह से लार टपकने लगी थी और मेरे लण्ड की तो पूछो मत.. क्या हालत थी.. बस समझो कि कच्छा फाड़ कर बाहर आना चाह रहा था। वासना के मारे मैंने जगजीत के गाल पर काट दिया।

जगजीत बोली- क्या कर रहे हो.. ठीक हो ना आप ?

'अरे आगे सुनाओ..' मैं अपना उतावलापन नहीं छुपा पा रहा था।

'आप भी बड़े मजे ले रहे हो..'

मेरी जांघ पर चपत लगाते हुए जगजीत ने कहा और आगे सुनाने लगी।

बाबा जी ने कहा- अपनी कमीज़ ऊपर करो बेटा..

मैंने अपने चूतड़ ऊपर उठाकर कमीज़ ऊपर की.. नीचे से मेरी लाल रंग की पैन्टी दिखाई दी तो मेरी बेदाग़ गोरी टाँगें देखकर बाबा अचानक बोल पड़े।

‘वाह रब्ब जी.. कितनी गोरी-चिट्ठी दूध जैसी लड़की बनाई है। लेकिन तुम्हारी यह कच्छी हमारी अवज्ञा कर रही है.. लाओ अभी इसे भी निकाल देते हैं।’

बाबा जी दोनों जाँघों की तरफ से उंगलियाँ डालकर मेरी पैन्टी को नीचे सरकाने लगे।

मैंने फिर से गांड उठाते हुए कहा- बाबा जी बस इसी ने मेरी इज्जत को ढका हुआ था। यह कह कर मैंने अपने मुँह पर हाथ रख लिया।

‘घबराओ मत बेटी मैं तुमसे कुछ जोर जबरदस्ती नहीं कर रहा हूँ.. बस प्रसाद ग्रहण करो और चली जाओ। मुँह पर से हाथ हटाओ.. मुझसे शर्मने की क्या ज़रूरत है?’

कहते हुए बाबा जी ने मेरी पूरी कच्छी सरकाते हुए पैरों तक खिसकाकर अलग की.. फिर नीचे फेंक दी।

‘बेटी तुम्हारी योनि तो बिल्कुल कोमल कली के जैसी है.. बहुत ही सुन्दर है’ बाबा जी खुशी से मेरी चूत देखते हुए बोले।

बाबा जी की लम्बाई ज्यादा होने के कारण उन्हें ज्यादा झुकना पड़ना था.. इसलिए जब वह झुके तो उन्होंने दोनों हाथ मेरे सर की दोनों तरफ रख लिए।

मैंने पहले उनकी आँखों में देखा और फिर सर झुका लिया। नीचे का दृश्य तो देखने लायक था.. ऊपर से लटकता हुआ उनका लौड़ा मेरी टांगों के बीच तक आ रहा था।

बाबा बोले- लिंग का योनि से स्पर्श करवाओ बेटी।

मैंने लटकते हुए लिंग को बीच में से मुट्ठी में पकड़ा और अपनी फुद्दी के पास ले आई।

लिंग के सुपाड़े को मैंने अपनी फुद्दी की दरार में रखकर घिसना शुरू किया।

मुझे मालूम था कि सिर्फ स्पर्श करवाना है लेकिन मैं रुक नहीं पा रही थी।

मस्ती के जोश में मैंने अपनी टाँगें खोल दीं.. जिससे दरार थोड़ी ज्यादा खुल जाए। मेरी हालत देख कर बाबा जी समझ गए और उनकी हँसी निकल गई और उन्होंने कहा- हा हा.. क्या चाहती हो बेटी ?

मैं कुछ बोल नहीं पा रही थी.. इसलिए उनका लिंग छोड़कर मैंने अपना सर एक तरफ कर लिया और अपने हाथ उनकी बाजूओं.. कन्धों एवं पीठ पर चलाने लगी।

‘देख लो ले पाओगी पूरा लिंग..’ बाबा जी मेरी इच्छा भांपते हुए बोले। मैंने बहुत ही हल्की आवाज़ में कहा- प्रसाद समझकर ले लूँगी बाबा जी।

बाबा जी अपनी बाजू मोड़कर अपनी कोहनियों पर मेरे मुँह के पास नीचे हो गए और बिना किसी चेतावनी के अपनी लम्बी सारी जीभ निकलकर मेरे होंठों को चाटने लगे।

मैं आज तक इतने लम्बे मर्द के नीचे नहीं आई थी। इतने पास से उनका मुख और भी बड़ा लग रहा था। उनकी पीठ पर मेरे हाथों से पता चल रहा था कि उनके कंधे बेहद चौड़े थे और उम्र के कारण त्वचा ज्यादा कसी नहीं रही थी।

उनकी मोटी-मोटी आँखों में लाली उतरने लगी और इस ख्याल से मुझे घबराहट होने लगी थी कि आज जब कोई असली मर्द मेरे जिस्म का भोग करेगा.. तो मेरा क्या होगा।

एक बार मैं उनकी जीभ मेरी टुड्डी से आँखों तक जा रही थी और उनकी लार से मेरा मुँह थोड़ा गीला होने लगा था। उनका यह जानवरों जैसे व्यवहार मुझे सुख दे रहा था। वह कभी मेरे गालों को मुँह में भरकर चूसने लगते.. कभी मेरी नाक को और बीच-बीच में अपनी जीभ मेरे मुँह में डाल देते.. जो सीधा मेरे गले तक जा लगती।

वह ऐसे कर रहे थे जैसे किसी बच्चे को लॉलीपॉप मिल गया हो.. या कोई खूंखार जानवर शिकार की तैयारी कर रहा हो।

मैं बोली- आराम से बाबा जी ।

उन्होंने थोड़ा रुककर मेरी बात पर बिना ध्यान दिए जवाब दिया- क्या नाम है तुम्हारा बेटी ?

मैंने कहा- जी.. जगजीत कौर ।

बाबा ने प्रेम से पूछा- और मैं क्या कहूँ तुम्हें ?

‘जी घर पर सब प्यार से जगगो कहते हैं.. आप भी जगगो बुला लो !’

मैंने शरमाकर जवाब दिया और उनकी लार से गीले गालों में से शर्म के मारे गर्मी निकलने लगी । उनका लिंग अब और भी ज्यादा अकड़ने लगा था जो कि मैं अपनी जाँघों पर महसूस कर पा रही थी ।

‘वाह.. बहुत सुन्दर नाम है.. जगगो.. अब देखती जाओ जगगो.. यह बाबा स्वामी चरनदास कैसे तुम्हारी इज्जत उतारता है..’

बाबाजी मेरी बीवी की इज्जत से खिलवाड़ करने लगे.. अगले पार्ट में जानते हैं कि क्या हुआ ।

मुझे ईमेल लिखते रहिएगा ।

hsnatcher@ymail.com

कहानी जारी है ।

Other stories you may be interested in

जीजू ने दीदी को अपने दोस्त से चुदवाया

हैल्लो फ्रेंड्स! मेरी पिछली कहानी आपने पढ़ी भाई के साथ मस्ती मैं एक बार फिर से हाजिर हूँ एक नयी कहानी लेकर जो कि मेरी एक फ्रेंड की है। उसके कहने पर मैं ये कहानी आप लोगों तक पहुंचा रही [...]

[Full Story >>>](#)

जवान जाटनी के नंगे बदन की सवारी

दोस्तो, मैं अन्तर्वासना साईट पर हिंदी सेक्स कहानियां पिछले 2010 से पढ़ रहा हूँ. किसी की कहानी सच्ची लगती तो किसी की कल्पना पर आधारित होती. पर मेरा एक दिन भी ऐसा नहीं जाता था, जब मैं कहानी न पढ़ूँ [...]

[Full Story >>>](#)

दोस्त की बहन की हवस पूरी की

दोस्तो! मेरा नाम दीपक है, मैं 26 साल का हूँ. मेरी लम्बाई 6 फीट और 1 इंच है. मैं देखने में काफी गोरा हूँ और मेरी लम्बाई की वजह से मेरी पर्सनेलिटी भी अच्छी दिखाई देती है. मेरी पिछली कहानी [...]

[Full Story >>>](#)

फुफेरी भाभी की हवस और मेरा लंड

नमस्कार दोस्तो, मेरा नाम पंकज है (ये बदला हुआ नाम है) मैं अपने बारे में बता दूँ, मैं सोनीपत हरियाणा का रहने वाला हूँ. मेरी लम्बाई 6 फुट 2 इंच है और मैं एक अच्छे शरीर का मालिक हूँ. मेरे [...]

[Full Story >>>](#)

मेरी सहेली ने मुझे काल बाँय से चुदवाया : ऑडियो सेक्स कहानी

यह करीब तीन महीने पहले की बात है. मैं अपने पति से बहुत परेशान हो गयी थी क्योंकि वो मुझे संतुष्ट नहीं कर पाते थे और जल्दी ठंडे हो जाते थे. क्योंकि मेरे पति का हथियार बहुत छोटा था, सिर्फ [...]

[Full Story >>>](#)

